बच्चों के लिए बाइबिल
प्रस्तुति

# यिर्मयाह,
# आशुओं वाला
# आदमी

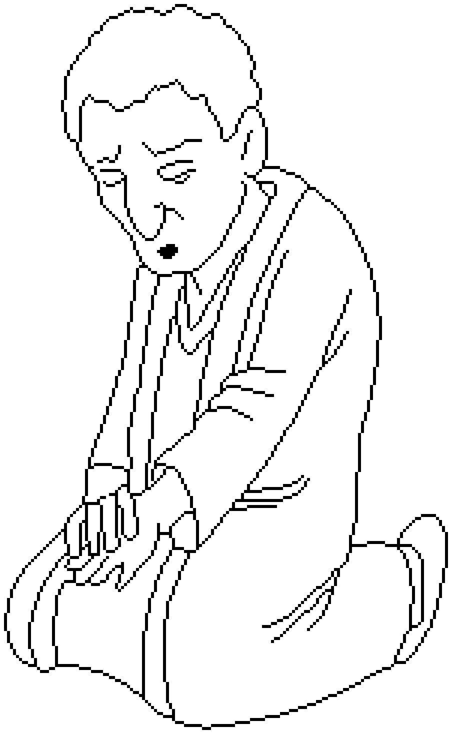

लेखक: Edward Hughes
व्याख्याकार: Jonathan Hay
रूपान्तरकार: Mary-Anne S.
अनुवाद: Suresh Kumar Masih
प्रस्तुतकर्त्ता: Bible for Children
www.M1914.org

BFC
PO Box 3
Winnipeg, MB R3C 2G1
Canada

©2015 Bible for Children, Inc.
अनुज्ञापत्र (लाइसेंस): आप इन कहानियों की छाया प्रति और मुद्रण करवा सकते हैं, बशर्ते कि बेचें नहीं।

यिर्मयाह यहूदा के राज्य में एक धार्मिक घर में पैदा हुआ था। उसका पिता, हिल्किय्याह, एक पुजारी था। उसका परिवार अनातोत नामक एक शहर में रहता था जो यरूशलेम से कुछ ही दूरी पर है। शायद यिर्मयाह के माता पिता भी सोच रहे थे; वह भी एक पुजारी बन जाएगा। लेकिन परमेश्वर के पास कुछ और ही योजना थी।

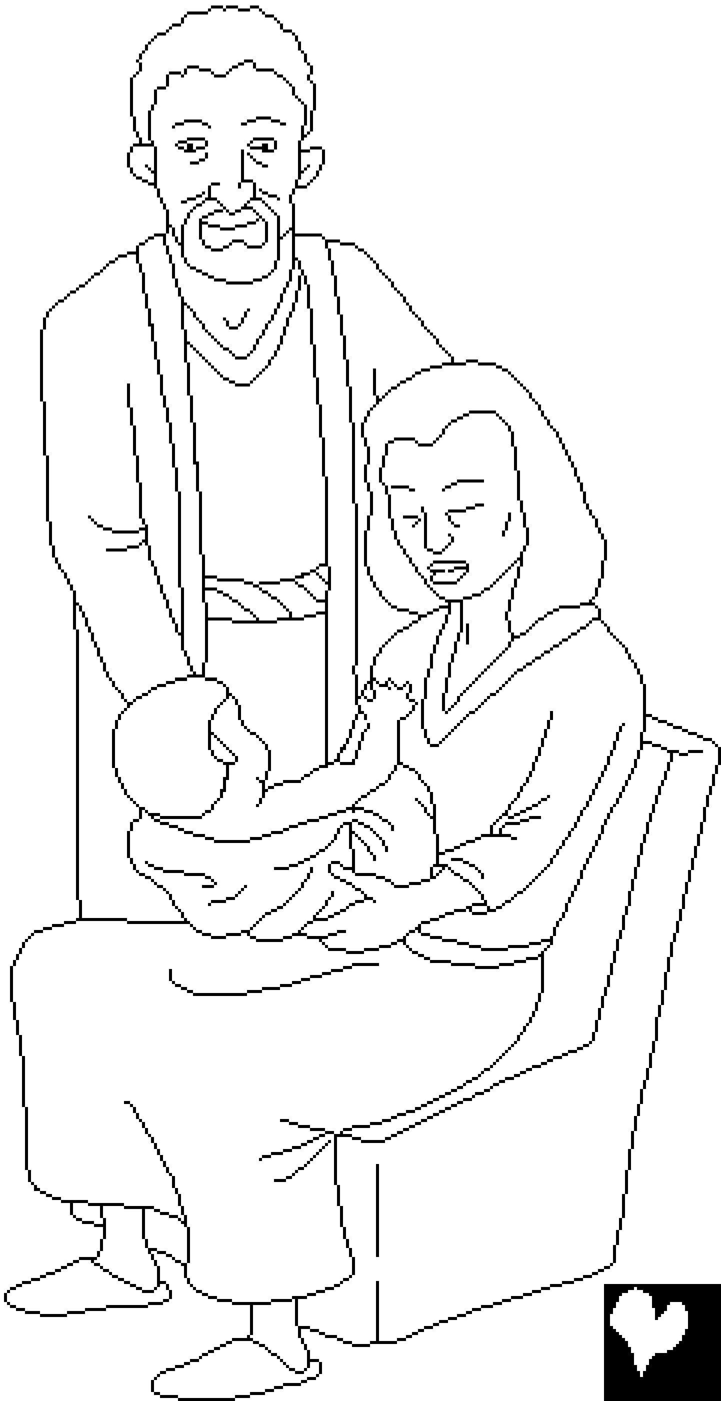

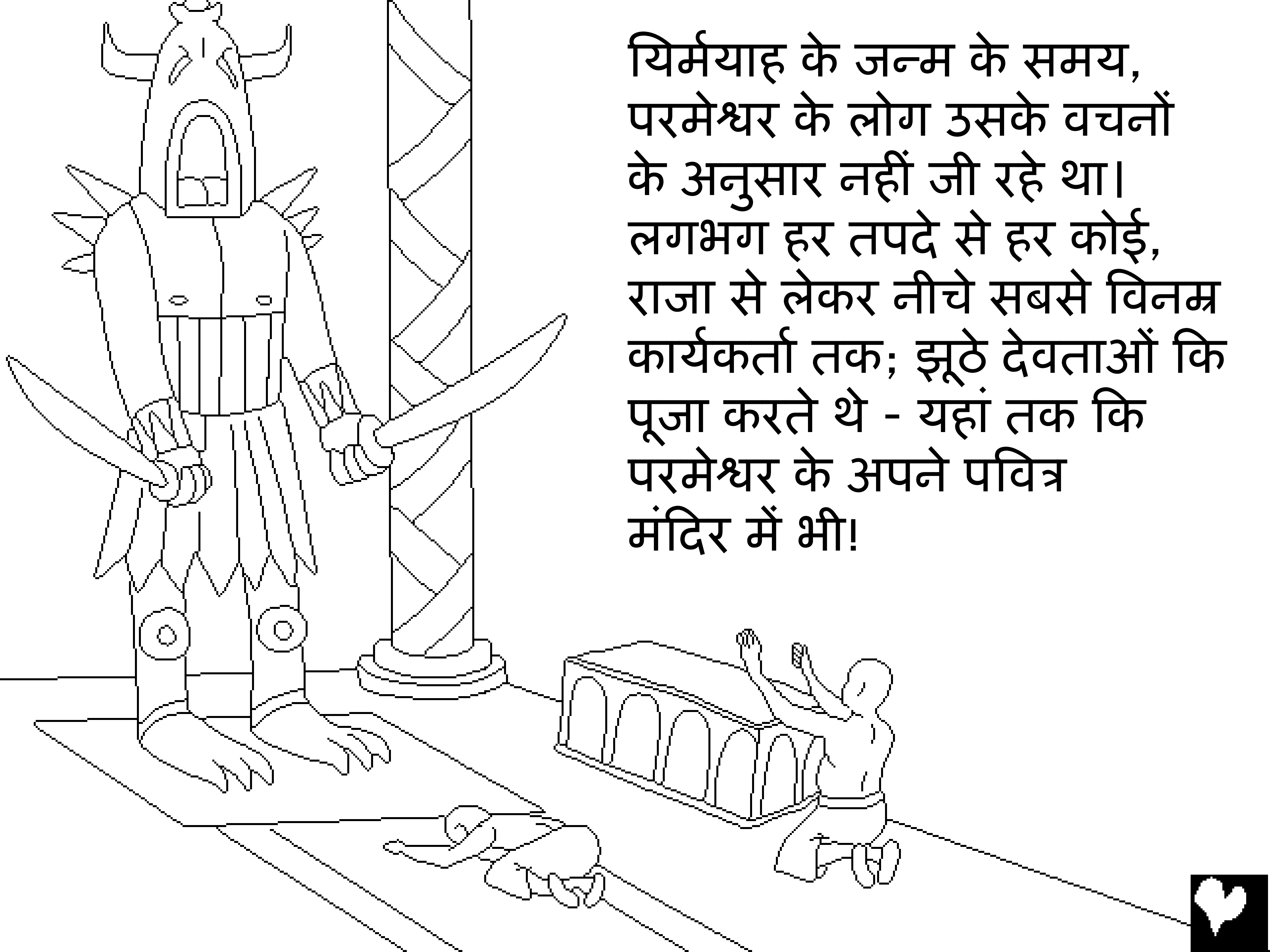

यिर्मयाह के जन्म के समय, परमेश्धर के लोग उसके वचनों के अनुसार नहीं जी रहे था। लगभग हर तपदे से हर कोई, राजा से लेकर नीचे सबसे विनम्र कार्यकर्ता तक; झूठे देवताओं कि पूजा करते थे - यहां तक कि परमेश्धर के अपने पवित्र मंदिर में भी!

जब यिर्मयाह
एक जवान आदमी
हो गया, परमेश्वर
ने उससे बातें की। "मैं
तुम्हे, तुम्हारे जन्म के पहले से ही जानता हूँ" और
तब मैंने यह योजना बनाई की तुम मेरे लिए बातें करो।

परमेश्वर की बुलाहट से शायद यिर्मयाह को डर लगने लगा होगा। "हे, प्रभु परमेश्वर!" वह पुकार कर कहा "मैं तो सिर्फ एक बालक हूँ; मैं बात नहीं कर सकता हूँ।" वह एक बच्चे की तुलना में बड़ा था; - वह उस समय बीस वर्ष का था। लेकिन यिर्मयाह को लगता था कि वह उसके चारों ओर की दुष्टता के खिलाफ परमेश्वर के लिए लोगों को चेतावनी नहीं दे सकता था।

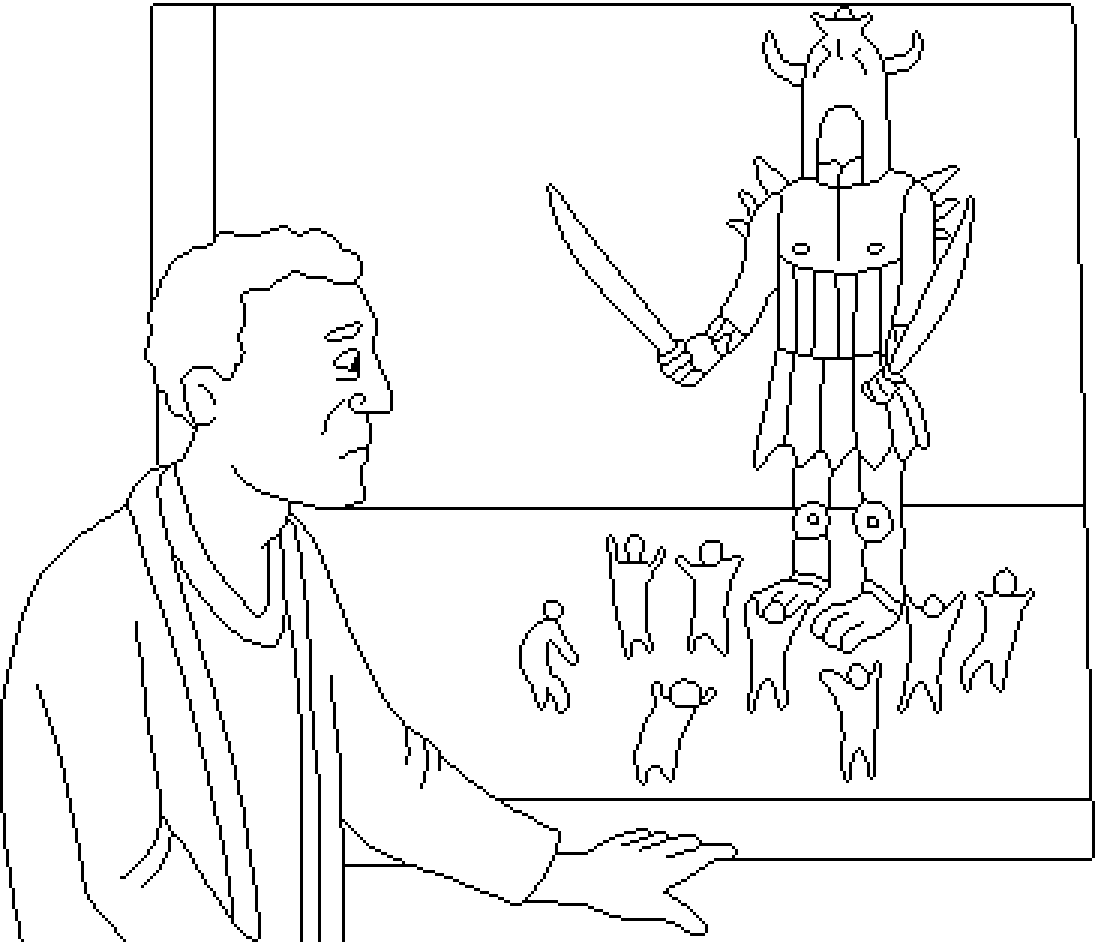

"मत डरो" परमेश्वर ने यिर्मयाह को आश्वासन दिया। जहाँ कहीं भी मैं तुम्हे भेजता हूँ, तू वहाँ जा। जो कुछ मैं तुम्हे कहने के लिए कहता हूँ तू कह।

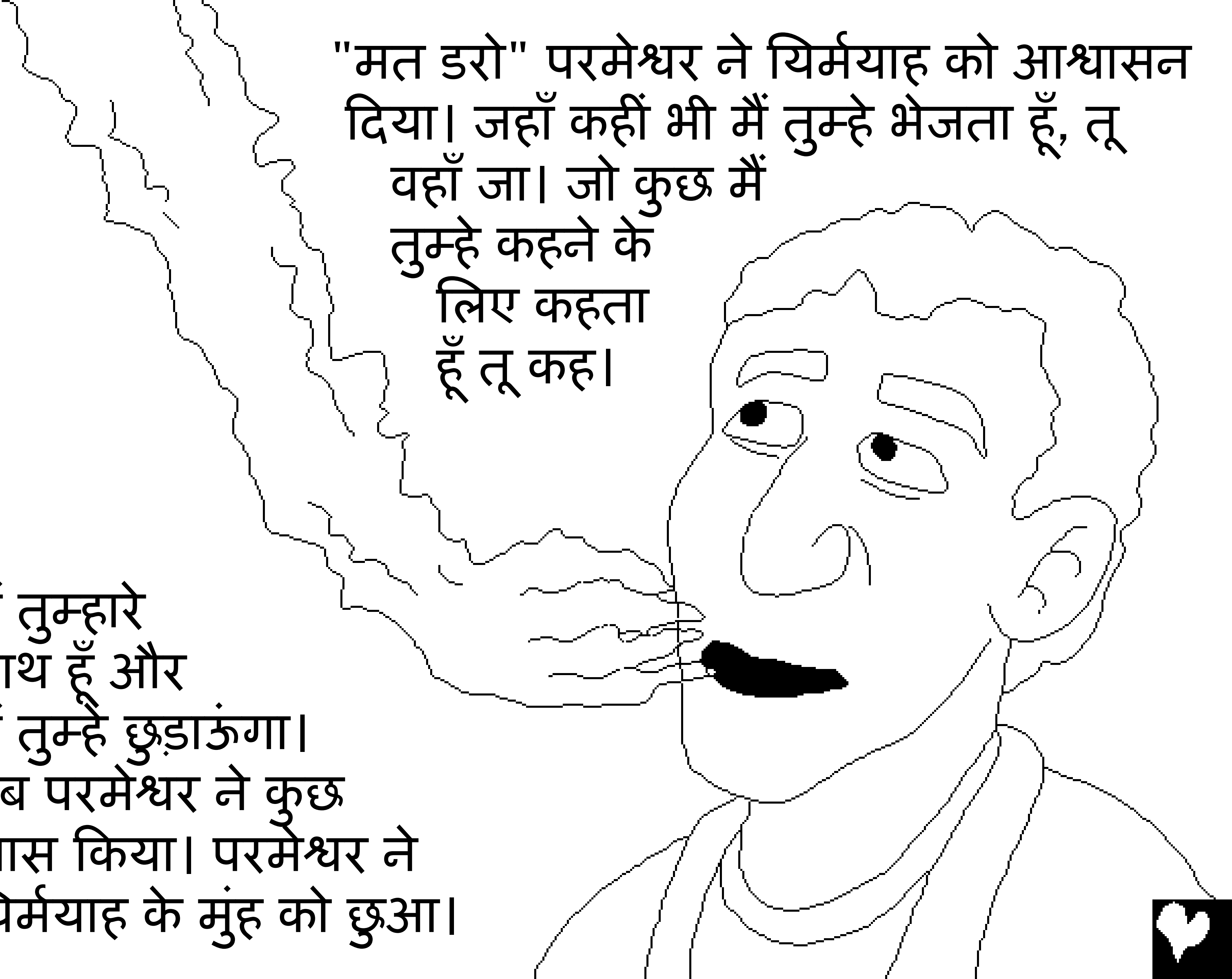

मैं तुम्हारे साथ हूँ और मैं तुम्हे छुड़ाऊंगा। तब परमेश्वर ने कुछ खास किया। परमेश्वर ने यिर्मयाह के मुंह को छुआ।

परमेश्वर ने यिर्मयाह को शक्ति और साहस और बुद्धि दी। उसने हियाव से लोगों को बताया कि परमेश्वर उन्हें प्यार करता है और उनकि मदद करना चाहता है। लेकिन किसी ने भी उसकी न सुनी। राजा भी नहीं।

यहां तक कि पुजारियों ने भी क्रोध किया और परमेश्वर के बारे में बातें करने से मना किया। झूठे भविष्यद्वक्ताओं ने भी यिर्मयाह के बारे में बताये कि वह सच नहीं बोल रहा था।

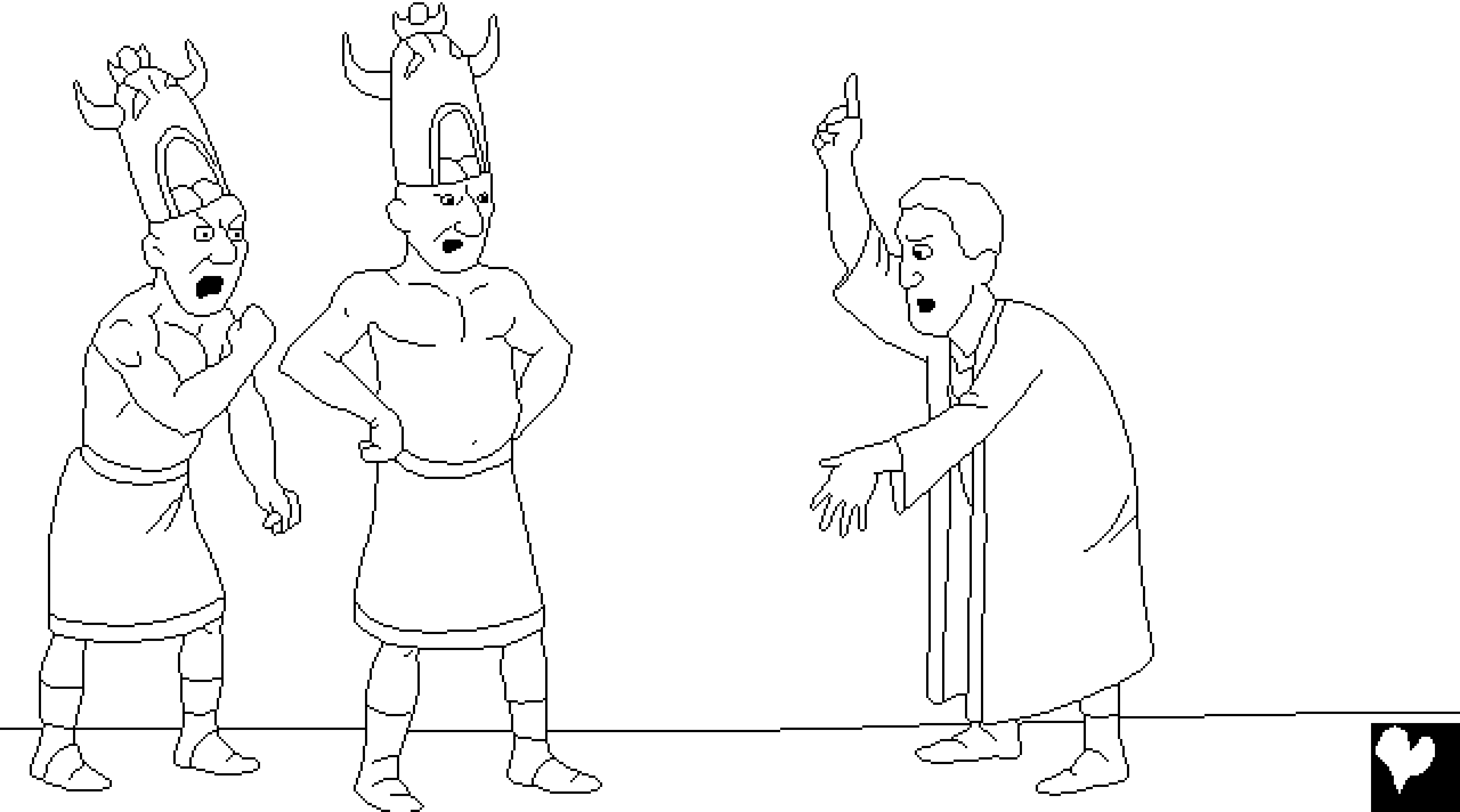

यिर्मयाह ने लोगों को याद दिलाया कि सौ साल पहले, इस्राएल के उत्तरी राज्य ने परमेश्वर को त्याग दिया था। उनके दुश्मन, अश्शूरी लोगों ने उनपर विजय प्राप्त कि और उन सभी इस्राएलियों को दूर देश लेकर चले गये।

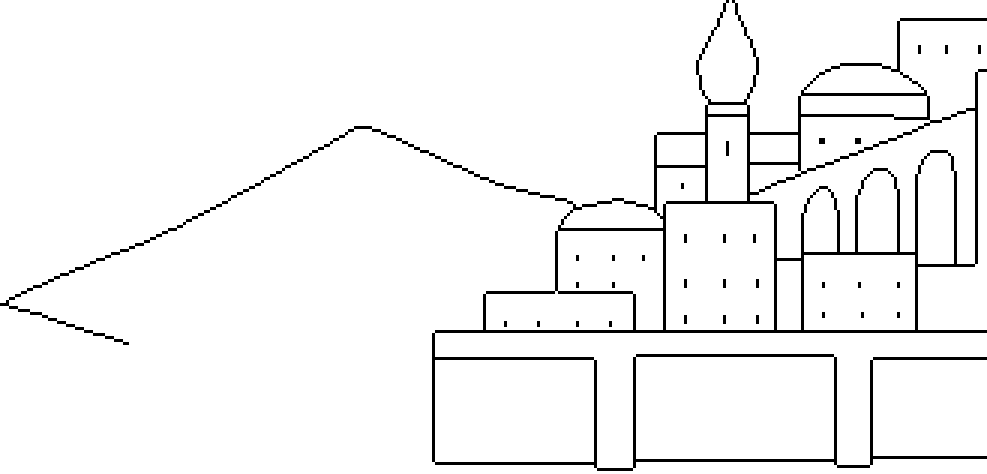

अब यहूदा, दक्षिणी राज्य
के लोगों ने परमेश्वर को
छोड़ दिया है। दुश्मन
सेना पहले से ही कूच कर
चुके थे! क्या परमेश्वर
अपने लोगों पर फिर से
विजय प्राप्त करने और
उन्हें गुलामी में जाने
कि अनुमति देगा?

लोगों ने अपनी मूर्तियों पर भरोसा किया। क्या मूर्तियां उन्हें उनके शत्रुओं से रक्षा कर सकतीं है? नहीं! केवल परमेश्वर ही उन्हें बचा सकता है। लोग यिर्मयाह पर इतना क्रोधित हो गये कि उसे मारने कि साजिश तक कर डाली। लेकिन परमेश्वर ने अपने दास कि रक्षा की।

अंत में, परमेश्वर ने यिर्मयाह को कुछ ऐसी चौंकाने वाली बातें कही। परमेश्वर ने कहा, "इन लोगों के लिए प्रार्थना मत कर; वे जब मदद के लिए मेरी गुहार लगाएंगे तब मैं उन्हें नहीं सुनूंगा।"

यिर्मयाह ने राजा को चेतावनी दी कि वह बाबुल की सेना के साथ लड़ाई में हार जायेगा। राजा क्रोधित हुआ और यिर्मयाह को जेल में डलवा दिया। यहां तक की जेल में भी, यिर्मयाह ने परमेश्वर पर विश्वास और उपदेश जारी रखा।

जेल से बाहर निकलने के
बाद यिर्मयाह फिर से राजा
और लोगों के लिए प्रचार
किया कि वे परमेश्वर के पास
वापस आ जाएँ और उस पर
बिश्वास रखे। इस बार, राजा
ने यिर्मयाह को
एक गहरे गंदे
तहखाने में
डाल दिया।

लेकिन परमेश्वर राजा के दिल में काम कर रहा था। उसने चुपके से यिर्मयाह को बचाया और पूछा कि परमेश्वर ऐसा क्या चाहता है कि राजा करे। यिर्मयाह ने जबाब दिया, "तुम आत्मसमर्पण कर गुलामी में चले जाओ, और परमेश्वर तुमसे कहता है कि तुम जीवित रहोगे"।

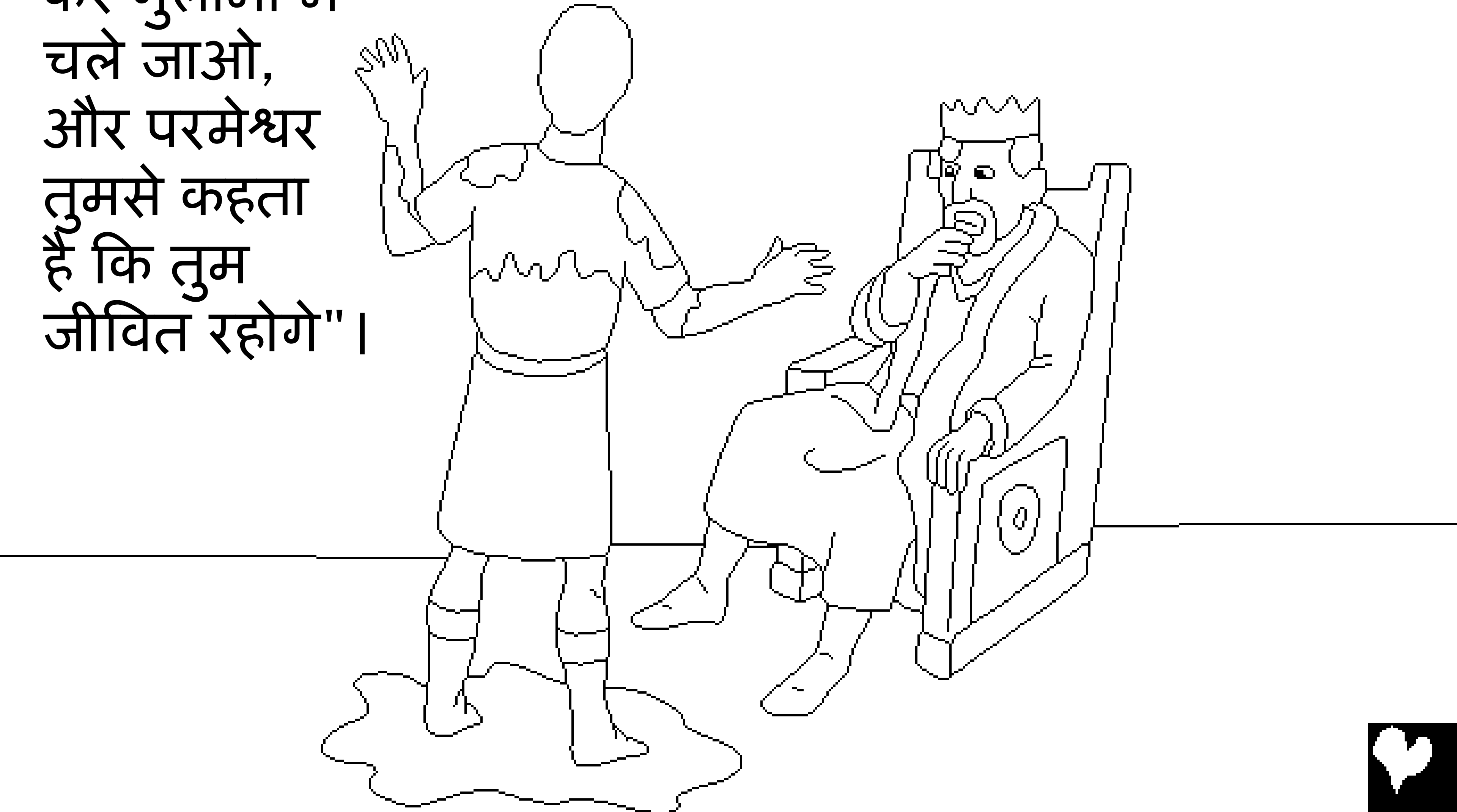

बेबीलोन की सेना ने पूरे यरूशलेम और यहूदा के सब कुछ पर विजय प्राप्त की। वे दीवारों और सभी भवनों को नाश कर दिए, और सब कुछ जला दिये। परमेश्वर ने कहा की उनके लोगों को सत्तर साल के लिए गुलामी में जाना होगा,

और तब फिर मैं उन्हें वादा के देश में वापस लेकर आऊंगा।

यिर्मयाह, आशुओं वाला आदमी

बाइबिल से, परमेश्वर के वाणी में कहानी

में पाया गया

यिर्मयाह

“जो आपके जीवन में प्रकाश देता है।”
प्लाज्म 119:130

# समाप्त

बाइबल की यह कहानी हमें अपने उस अद्भुत परमेश्वर के बारे में बतलाती है जिसने हमें बनाया और जो चाहता है कि आप उसे जानें।

परमेश्वर जानता है कि हमने ऐसे गुनाह किए हैं जिन्हें वह पाप मानता है। पाप की सज़ा मौत है किंतु परमेश्वर आपसे इतना प्रेम करता है कि उसने अपने एकमात्र पुत्र यीशु को इस दुनिया में भेजा ताकि वह सूली (क्रॉस) पर चढ़कर आपके पापों की सजा भुगते। यीशु मरने के बाद पुन: जीवित हुआ और स्वर्ग में अपने घर चला गया। यदि आप यीशु में विश्वास करते है और उससे अपने पापों की क्षमा मांगते हैं तो वह अपकी प्रार्थना सुनेगा। वह अभी आकर आपके अंदर बसेगा और आप हमेशा ही उसके साथ बने रहेंगे।

यदि आपको विश्वास है कि यह सब कुछ सच है, तो परमेश्वर से कहें: प्रिय यीशु, मुझे विश्वास है कि तू ही परमेश्वर है और मनुष्य के रूप में अवतरित हुआ ताकि मेरे पापों की वजह से। मौत की सजा भुगत सके और अब तू पुन: जीवित हुआ है। कृपया मेरी ज़िंदगी में आकर मेरे पापों को क्षमा कर, ताकि मुझे एक नया जीवन मिले और एक दिन में हमेशा हमेशा के लिए तेरे साथ हो लूं। हे यीशु, मेरी मदद कर ताकि मैं तेरी हर आज्ञा का पालन कर सकूं और तेरी संतान के रूप में तेरे लिए जी सकूं। आमीन।

बाइबल पढ़ें और प्रतिदिन ईश्वर से बात करें! जॉन 3:16